माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. श्वेता अग्रवाल*

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। साथ ही इन स्तरों के पुरूश एवम् महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का भी तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाते हुए प्रतिदर्श के रूप में 34 माध्यमिक विद्यालयों को यादृच्छिक न्यादर्श चयन की लॉटरी विधि से और कला (240 शिक्षक) एवम् विज्ञान (240 शिक्षक) वर्ग के शिक्षकों को आकस्मिक चयन विधि से चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित टीचर्स ईमोशनल इन्टैलीजेन्स इनवेन्टरी (Teachers' Emotional Intelligence Inventory) का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों में मध्यमान एवम् मानक विचलन तथा निर्वचनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों में क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, जबकि माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूश एवम् महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जिसके आधार पर स्पष्ट होता है कि वर्गों के आधार पर शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तावना

विद्यालयों के कक्षा–कक्ष में देश के भविष्य का निर्माण होता है। विद्यालयों में निर्माणकर्ता के रूप में शिक्षक कार्यरत होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक का व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर सकारात्मक रूप में पड़े। जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च स्तर की हो जाए। साथ ही विद्यालय के वातावरण को विद्यार्थियों व अन्य कर्मचारियों के अनुकूल कर दे। शिक्षक विद्यालय में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ एवम् क्रियाकलाप करते हैं। इन सब गतिविधियों तथा क्रियाकलापों को सम्मिलित रूप में शिक्षण–अधिगम व्यवहार के रूप में सम्बोधित किया जाता है। शिक्षक के सामान्य तथा कक्षागत क्रियाकलाप शिक्षक व्यवहार की ओर संकेत करते हैं और इन क्रियाकलापों में शिक्षकों के संवेग भी प्रदर्शित होते हैं। शिक्षकों को इस तथ्य का ज्ञान होना चाहिए कि किस परिस्थिति में कौन से संवेग कैसे प्रदर्शित किए जाए, ताकि शिक्षकों के व्यवहार एवम् क्रियाओं का विद्यालय के अन्य व्यक्तियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े अर्थात् शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनके संवेगों पर नियन्त्रण को प्रदर्शित करती है। शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के अर्न्तगत उनकी स्वयं व अन्य के प्रति जगरूकता (Awareness of the self & others), व्यावसायिक उन्मुखीकरण (Professional orientation), अन्तः व्यैत्तिक प्रबन्ध (Intra-personal management) तथा अन्तरव्यैत्तिक प्रबन्ध (Inter-personal management) को समाहित किया जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि पर शिक्षकों के द्वारा किए जाने वाले निम्न व्यवहार आधारित होते हैं – शिक्षक स्वयं व अन्य को समाज व विद्यालय में क्या स्थान देते हैं, स्वयं की क्षमताओं एवम् योग्ताओं को किस स्तर का मानते हैं , अपने लक्ष्य के लिए कितने तत्पर हैं, अपने व्यवसाय में स्वयं को क्या स्थान देते हैं, नवीन परिस्थितियों को किस रूप में लेते हैं, समस्याओं का समाधान कितनी दृढ़ता के साथ करते हैं, स्वयं के संवेगों को किस प्रकार नियन्त्रित करते हैं, दूसरों के साथ संवेगों के आधार पर कैसा व्यवहार करते हैं, स्वयं पर कितना व किस रूप का विश्वास रखते हैं आदि। यह सभी व्यवहार शिक्षकों की शिक्षण क्रियाओं को कहीं न कहीं प्रभावित करते हैं। शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनकी शिक्षण योजनाओं, शिक्षण विधि, शिक्षण सहायक सामग्री, शैक्षिक तकनीकि, व्यूह रचनाओं आदि सभी को प्रभावित करती है। जिससे

*पूर्व सहायक प्रोफेसर, दाऊ दयाल महिला पी.जी. कॉलेज, फिरोज़ाबाद (उत्तर प्रदेश)

उनके द्वारा किया जाने वाला सम्पूर्ण शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। अतः स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को उच्च करने के लिए शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को भी उच्च बनाने की आवश्यकता होती है। साथ ही कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण कार्य हेतु कुछ अलग–अलग माँगे होती हैं। जिनके आधार पर शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर हो सकता है। वास्तविक रूप में इन दोनों वर्गों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर होता है या नहीं? यह जानने के लिए प्रस्तुत शोध के द्वारा माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जिससे इन दोनों वर्गों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को उनकी माँग के अनुसार उच्च करने के तरीके निकाले जा सकें।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूश व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूष व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध के निमित्त न्यादर्श चयन हेतु शोधार्थी द्वारा सम्भाव्य न्यादर्श प्रविधियों (Probability sampling methods) को अपनाते हुए आगरा नगर के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, इलाहाबाद द्वारा संचालित 34 माध्यमिक विद्यालयों के चयन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श चयन की लॉटरी विधि (Lottery method of Random Sampling) को अपनाया गया। साथ ही प्रत्येक विद्यालय में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का चयन आकस्मिक चयन विधि (Incidental Sampling method) के द्वारा किया गया। जिसमें कुल 480 शिक्षकों का चयन किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध के सन्दर्भ में सम्बन्धित प्रदत्तों के संकलन हेतु शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित टीचर्स ईमोशनल इन्टैलीजेन्स इनवेन्टरी (Teachers' Emotional Intelligence Inventory) का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध के सन्दर्भ में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों में मध्यमान एवम् मानक विचलन तथा निर्वचनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों में क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेशण एवम् विवेचन

माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

इस उद्देश्य हेतु प्रदत्त एकत्रित कर माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मध्यमान की मानक त्रुटि, मानक विचलन, मानक विचलन की मानक त्रुटि, विषमता व कुकुदता ज्ञात किए गए। जिन्हें तालिका संख्या–1 में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका सं.–1 माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मध्यमान की मानक त्रुटि, मानक विचलन, मानक विचलन की मानक त्रुटि, विषमता व कुकुदता मान

क्र. सं.	संवेगात्मक बुद्धि के आयाम	मध्यमान (M) (n=240)	म. की मा. त्रुटि (SEm)	मानक विचलन (σ)	मा. वि. की मा. त्रुटि (SEσ)	विषमता (Sk)	कुकुदता (Ku)
1	स्वयं व अन्य के प्रति जागरूकता (Awareness of one self & others)	197.41	1.42	21.94	[illegible]	-0.089	0.277
2.	व्यावसायिक अभिमुखीकरण (Professional orientation)	53.16	1.06	16.33	0.75	0.583	0.277
3.	अन्तःवैयक्तिक प्रबंध (Intra-personal management)	71.93	1.08	16.76	0.77	0.697	0.248
4.	अन्तर्वैयक्तिक प्रबंध (Inter-personal management)	175.05	1.80	27.90	1.30	-0.124	0.267
5	कुल (Total)	497.84	3.34	51.67	2.37	-0.088	0.254

उपरोक्त तालिका में प्राप्त मानों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षक सम्पूर्ण संवेगात्मक बुद्धि तथा उसके विभिन्न आयामों के परिप्रेक्ष्य में सामान्य स्तर को प्रेक्षित करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षक संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित निम्न तथ्यों में सामान्य व्यवहार प्रेक्षित करते हैं – स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं व कौशलों को समझना और उनके आधार पर विद्यालय में पद व स्थान की अपेक्षा करना; विद्यार्थियों की योग्यताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन करना व उनमें परिस्थिति और आवश्यकतानुसार परिवर्तन करना; विद्यार्थियों को प्रेरित करना, उनकी प्रशंसा करना, विद्यालय के सभी कर्मचारियों का सम्मान करना; लक्ष्य को केन्द्र बिन्दु मानते हुए कार्य करना; सभी से मित्रतापूर्ण व्यवहार करना; अपनी कमियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारना; समाज के अनुकूल कार्य करना; नवीन समस्याओं का समाधान करने के लिए तत्पर रहना; उत्तरदायित्वों को निष्ठा के साथ निभाना; अपनी कक्षा के परिणामों को सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना; स्वयं के शिक्षक होने व इससे समाज में प्राप्त स्थान पर गर्व करना; विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं के संवेगों पर नियन्त्रण बनाए रखना; स्वयं पर विश्वास रखना; अपना तनाव दूसरों पर नहीं निकालना; सूचना सम्प्रेषण करना; सामूहिक कार्य करना; हसमुख, प्रसन्चित, सहासी, दयालू, सहयोगी, निडर, जिम्मेदार, निर्णयशील, समाज के हित को ध्यान रखना आदि। अतः परिणामस्वरूप स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को सामान्य से उच्च स्तर की ओर ले जाने के लिए शिक्षकों को स्वयं के संवेगों पर नियन्त्रण करते हुए उनकी श्रेष्ठा पर ध्यान देने आवश्यकता है।

माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

इस उद्देश्य हेतु प्रदत्त एकत्रित कर माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मध्यमान की मानक त्रुटि, मानक विचलन, मानक विचलन की मानक त्रुटि, विषमता व कुकुदता ज्ञात किए गए। जिन्हें तालिका संख्या–2 में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका सं. – 2 माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मध्यमान की मानक त्रुटि, मानक विचलन, मानक विचलन की मानक त्रुटि, विषमता व कुकुदता मान

क्र. सं.	संवेगात्मक बुद्धि के आयाम	मध्यमान (M) (n=240)	म. की मा. त्रुटि (SEm)	मानक विचलन (σ)	मा. वि. की मा. त्रुटि (SEσ)	विषमता (Sk)	कुकुदता (Ku)
1	स्वयं व अन्य के प्रति जागरूकता (Awareness of oneself & others)	186.26	1.32	20.37	0.93	-0.182	0.293
2	व्यावसायिक अभिमुखीकरण (Professional orientation)	83.09	0.98	15.24	0.70	0.707	0.256
3	अन्तःवैयक्तिक प्रबंध (Intra-personal management)	70.52	0.87	13.48	0.62	0.427	0.302
4	अन्तर्वैयक्तिक प्रबंध (Inter-personal management)	188.78	2.04	31.66	1.45	0.027	0.271
5	कुल (Total)	521.66	3.43	53.14	2.44	-0.198	0.254

तालिका –2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षक भी सम्पूर्ण संवेगात्मक बुद्धि तथा उसके विभिन्न आयामों के सन्दर्भ में सामान्य स्तर प्रदर्शित करते हैं। अतः स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षक संवेगात्मक बुद्धि के स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं व कौशलों को समझना और उनके आधार पर विद्यालय में पद व स्थान की अपेक्षा करना; विद्यार्थियों की योग्यताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन करना व उनमें परिस्थिति और आवश्यकतानुसार परिवर्तन करना; विद्यार्थियों को प्रेरित करना, उनकी प्रशंसा करना, विद्यालय के सभी कर्मचारियों का सम्मान करना; लक्ष्य को केन्द्र बिन्दु मानते हुए कार्य करना; अपनी कमियों को स्वीकार कर

उन्हें सुधारना; सभी से मित्रतापूर्ण व्यवहार करना; समाज के अनुकूल कार्य करना; नवीन समस्याओं का समाधान करने के लिए तत्पर रहना; उत्तरदायित्वों को निष्ठा के साथ निभाना; अपनी कक्षा के परिणामों को सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना; स्वयं के शिक्षक होने व इससे समाज में प्राप्त स्थान पर गर्व करना; विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं के संवेगों पर नियन्त्रण बनाए रखना; स्वयं पर विश्वास रखना;सूचना सम्प्रेषण करना; सामूहिक कार्य करना; अपना तनाव दूसरों पर नहीं निकालना; हसमुख, प्रसन्चित, सहासी, निडर, सहयोगी, दयालू, जिम्मेदार, निर्णयशील, समाज के हित को ध्यान रखना आदि तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में सामान्य व्यवहार प्रेक्षित करते हैं। अतः परिणामस्वरूप विदित होता है कि माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को सामान्य से उच्च करने के लिए शिक्षकों को स्वयं अपने शिक्षण कार्य एवम् स्वयं को सम्मानित समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण है साथ ही स्वयं को आत्मविश्वास से पूर्ण करते हुए श्रेष्ठा की ओर ले जाने की आवश्यकता है।

माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

इस उद्देश्य हेतु प्रदत्त एकत्रित कर माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात मान ज्ञात किए गए। जिन्हें तालिका संख्या – 3 में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका सं॰–3 माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात मान

क्र० सं०	संवेगात्मक बुद्धि के आयाम	कला वर्ग		विज्ञान वर्ग		क्रान्तिक अनुपात (df= [illegible])	सार्थकता स्तर
		मध्यमान (n=240)	मानक विचलन	मध्यमान (n=240)	मानक विचलन		
1.	स्वयं व अन्य के प्रति जगरूकता (Awareness of the self & other)	187.46	21.41	183.93	23.57	0.7313	>0.05
2.	व्यावसायिक उन्मुखीकरण (Professional orientation)	83.18	16.38	83.09	15.27	0.0605	>0.05
3.	अन्तः वैयक्तिक प्रबन्ध (Intra personal management)	71.80	16.76	70.92	13.49	0.7017	>0.05
4.	अन्तरवैयक्तिक प्रबन्ध (Inter personal management)	176.26	27.90	183.79	31.96	2.4044	<0.05
5	कुल (Total)	527.88	51.97	521.88	53.14	1.2953	>0.05

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक अन्तर नहीं होता है। साथ ही संवेगात्मक बुद्धि के आयाम– स्वयं व अन्य के प्रति जगरूकता, व्यावसायिक उन्मुखीकरण तथा अन्तः व्यैत्तिक प्रबन्ध के सम्बन्ध में भी माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः विदित होता है कि माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षक स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं व कौशलों को समझना और उनके आधार पर विद्यालय में पद व स्थान की अपेक्षा करना; विद्यार्थियों की योग्यताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन करना व उनमें परिस्थिति और आवश्यकतानुसार परिवर्तन करना; स्वयं को सम्मानित समझना; विद्यार्थियों को प्रेरित करना, उनकी प्रशंसा करना, विद्यालय के सभी कर्मचारियों का सम्मान करना; लक्ष्य को केन्द्र बिन्दु मानते हुए कार्य करना; स्वयं के शिक्षक होने व इससे समाज में प्राप्त स्थान पर गर्व करना; सभी से मित्रतापूर्ण व्यवहार करना; अपनी कमियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारना; समाज के अनुकूल कार्य करना; नवीन समस्याओं का समाधान करने के लिए तत्पर रहना; उत्तरदायित्वों को निष्ठा के साथ निभाना; अपनी कक्षा के परिणामों को सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना; विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं के संवेगों पर नियन्त्रण बनाए रखना; स्वयं पर विश्वास करते हुए चुनौतियों का सामना करना; दृढ़ इच्छा शक्ति रखना आदि के परिप्रेक्ष्य में लगभग समान व्यवहार प्रेक्षित करते हैं। जबकि संवेगात्मक बुद्धि के आयाम – अन्तरव्यैत्तिक प्रबन्ध के परिप्रेक्ष्य में इन दोनों वर्गों के शिक्षक 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर प्रेक्षित करते हैं अर्थात् तालिका के पुनः अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षक सामूहिक कार्य करना; सूचना सम्प्रेषण करना; अपना तनाव दूसरों पर नहीं निकालना; दूसरों की व्यर्थ की बातों से परेशान नहीं होना; क्रोध पर नियन्त्रण रखना; हसमुख, प्रसन्चित, सहासी, दयालू, सहयोगी, निडर, जिम्मेदार, निर्णयशील, समाज के हित को ध्यान रखना आदि के सन्दर्भ में विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च स्तर प्रदर्शित करते हैं। सम्भवतः इसका कारण हो सकता है कि विज्ञान वर्ग के

शिक्षक कला वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा माध्यमिक विद्यालयों में मिलने वाली सुविधाओं में स्वयं को सन्तुष्ट नहीं पाते हैं जिसके कारण स्वयं कुछ तनावपूर्ण रहते हैं और जिससे उनके विद्यालय के अन्य व्यक्तियों से अन्तरव्यैत्तिक सम्बन्धों में कुछ कमी आ जाती है।

माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूष व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

इस उद्देश्य हेतु प्रदत्त एकत्रित कर माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूश व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात मान ज्ञात किए गए। जिन्हें तालिका संख्या – 4 में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका सं॰ – 4 माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूष व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात मान

क्र0 सं0	शिक्षकों के वर्ग / शिक्षकों के लिंग	कला वर्ग			विज्ञान वर्ग			df	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
		सं.	म.	मा.वि.	सं.	म.	मा.वि.			
1.	पुरुष	105	527.75	50.27	134	517.74	56.52	220	1.3847	>0.05
2.	महिला	87	528.09	53.35	106	528.80	50.04	192	0.2998	>0.05
3.	df		219			238				
4.	क्रान्तिक अनुपात		0.0467			[illegible]				
5.	सार्थकता स्तर		>0.05			>0.05				

तालिका संख्या – 4 के विश्लेषण से विदित होता है कि माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूष व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक अन्तर नहीं होता है अर्थात् कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूष शिक्षकों तथा दोनों वर्गों के महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में 95 प्रतिशत दशाओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है। साथ ही कला वर्ग के पुरूष एवम् महिला शिक्षकों के मध्य तथा विज्ञान वर्ग के पुरूष एवम् महिला शिक्षकों के मध्य भी संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं होता है। फलतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूष व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में केवल 5 प्रतिशत दशाओं में ही सार्थक अन्तर होता है अर्थात् इन शिक्षकों में संवेगात्मक बुद्धि के परिप्रेक्ष्य में 95 प्रतिशत दशाओं में समानता पाई जाती है।

निष्कर्षों के आधार पर दिए गए सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम इंगित करते हैं कि –

1. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि सामान्य स्तर की पाई गई। अतः कला वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को और अधिक उच्चता की ओर ले जाने की आवश्यकता है।
2. माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि भी सामान्य स्तर की पाई गई। परिणामतः स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को भी और अधिक उच्चता की ओर ले जाने की आवश्यकता है।
3. माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु संवेगात्मक बुद्धि के आयाम अन्तरव्यैत्तिक प्रबन्ध के परिप्रेक्ष्य में 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः विज्ञान के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में उक्त आयाम के सन्दर्भ में सुधार करने की आवश्यकता है।
4. माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के पुरूष व महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

व्यावहारिक शैक्षिक सुझाव

प्रशासकों एवम् प्रधानाचार्यों हेतु सुझाव

1. प्रशासक एवम् प्रधानाचार्य शिक्षकों के चयन के समय इस तथ्य पर विशेष ध्यान दे कि उन्हीं शिक्षकों का शिक्षण कार्य हेतु विद्यालय में चयन करें जिनकी संवेगात्मक बुद्धि उच्च स्तर की हो।
2. प्रशासक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को उच्च करने के सन्दर्भ में संगोष्ठियों का आयोजन करा

सकतें हैं। जिनमें शिक्षकों को विभिन्न समस्यात्मक परिस्थितियों में स्वयं के संवेगों को नियन्त्रित करते हुए समस्याओं का समाधान करना सिखाया जाए।

3. शिक्षक के व्यवहार, स्वभाव तथा उसकी पाठन विधियों, शिक्षण नीतियों तथा तकनीकियों में परिवर्तन के लिए भी संगोष्ठियों व कार्यशाला का आयोजन किया जायें। साथ ही इन संगोष्ठियों में सामूहिक कार्य करना; सूचना सम्प्रेषण करना; अपना तनाव दूसरों पर नहीं निकालना; दूसरों की व्यर्थ की बातों से परेशान नहीं होना; क्रोध पर नियन्त्रण रखना; हसमुख, प्रसन्चित, सहासी, दयालू, सहयोगी, निडर, जिम्मेदार, निर्णयशील, समाज के हित को ध्यान रखना विनोदी दृष्टि, अनुशासनहीनता पर नाराज़ होना, परिस्थिति बदलने पर शिक्षण विधि में परिर्वतन करना आदि पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।
4. प्रशासक विद्यालय में विशेषज्ञों को बुलाकर संवेगात्मक स्थिरता के सम्बन्ध में उनसे शिक्षण भी करा सकते हैं, जिससे शिक्षकों को उत्तम कक्षा–कक्ष संवेगात्मक नियन्त्रण को अवलोकन करने का अवसर मिले और शिक्षक स्वयं के व्यवहार में वांछनिय परिवर्तन कर सकें।
5. प्रशासक को चाहिए कि वह समय–समय पर गुप्त रूप से शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में सतत् रूप में मूल्यांकन करें तथा उसके आधार पर आवश्यकतानुसार सुधार करें।
6. प्रशासक शिक्षकों को शिक्षण कार्य हेतु वही विषय दे जिस विषय पर शिक्षक को विशेष योग्यता एवम् रुचि हो, क्योंकि एक शिक्षक स्वयं के रुचि व योग्यता वाले विषय को ही गुणवत्ता के साथ प्रभावी रूप में पढ़ा सकता है। साथ ही अमुक विषय के शिक्षण कार्य में शिक्षक के संवेग भी स्वतः ही साकरात्मक हो जाएगें।
7. उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों को समय–समय पर पुरस्कृत भी करना चाहिए। जिससे अन्य शिक्षक इस ओर प्रेरित हो सकें।
8. विद्यालय में प्रशासकों के द्वारा विज्ञान वर्ग के शिक्षकों को उनके विषय की प्रकृति एवम् आवश्यकता के आधार पर समय–समय पर विशेष सुविधायें देनी चाहिए।

शिक्षकों हेतु सुझाव

1. शिक्षकों को स्वयं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को उच्च बनाए रखने के लिए जागरूक होकर इस ओर प्रयास करने चाहिए।
2. शिक्षकों को सवेंगात्मक बुद्धि की विभिन्न सैद्धान्तिक एवम् व्यावहारिक विषय वस्तु अध्ययन करते रहना चाहिए ताकि वह इसकी बारीकियों को समझकर स्वयं के व्यवहार में ला सके।
3. शिक्षकों को चाहिए कि वह स्वयं के संवेगों पर विभिन्न परिस्थितियों में नियन्त्रिण रखें एवम् परिस्थिति और स्वयं के पद के अनुरूप व्यवहार करें।
4. शिक्षक सदैव अपने साथियों व विद्यार्थियों से स्वयं की संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में पृष्ठपोषण लेते रहें और उनके आधार पर स्वयं के व्यवहार में अपेक्षित सुधार करें।
5. शिक्षक केवल अपने शिक्षण कार्य से ही मतलब नहीं रखें, समयानुसार कक्षा–कक्ष का निरीक्षण करना, विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान निकालना, उन्हें प्रेरित करना, विभिन्न कार्यों में केवल अपने हित को ही महत्व नहीं देकर विद्यालय के हित को भी ध्यान देना, स्वयं की कमियों व गलतियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारना, चुनौतीपूर्ण व्यवहार करना आदि व्यवहार भी प्रेक्षित करें।
6. शिक्षकों को चाहिए कि वह शिक्षण कार्य के उत्तरदायित्वों एवम् जवाबदेही की सम्पूर्ण उपयोगिता का भी ज्ञान रखें जिससे वह शिक्षण कार्य के प्रति प्रदत्त उत्तरदायित्वों का निर्वाह निष्पक्ष रूप से कर सकें।
7. शिक्षक आत्म विश्वासी, प्रसन्नचित्तता, क्रियाशील, समायोजी, स्वयं के शिक्षक होने व इससे समाज में प्राप्त स्थान पर गर्व करना; विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं के संवेगों पर नियन्त्रण बनाए रखना; हसमुख, साहसी, दयालू, सहयोगी, निडर, जिम्मेदार, निर्णयशील, समाज के हित को ध्यान रखना आदि प्रवृत्तियों को अपने व्यवहार में समावेशित करें तो उनकी संवेगात्मक बुद्धि उच्च होने के साथ ही इसका सकारात्मक प्रभाव शिक्षकों की अन्य क्रियाओं पर भी पड़ेगा।

8. शिक्षकों को स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं व कौशलों को समझना और उनके आधार पर विद्यालय में पद व स्थान की अपेक्षा करना; विद्यार्थियों की योग्यताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन करना व उनमें परिस्थिति और आवश्यकतानुसार परिवर्तन करना; स्वयं को सम्मानित समझना; विद्यालय के सभी कर्मचारियों का सम्मान करना; लक्ष्य को केन्द्र बिन्दु मानते हुए कार्य करना; सभी से मित्रतापूर्ण व्यवहार करना; नवीन समस्याओं का समाधान करने के लिए तत्पर रहना; अपनी कक्षा के परिणामों को सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना; दृढ़ इच्छा शक्ति रखना आदि व्यवहारों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जिससे उनकी संवेगात्मक बुद्धि उच्च हो सके।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता कि दोनों वर्गों के शिक्षकों को स्वयं के व्यवहार में उच्च संवेगात्मक बुद्धि को प्रेक्षित करने के अथक प्रयास करने चाहिए, जिससे शिक्षकों के स्वयं के व्यक्तित्व में भी और निखार आ सके। साथ ही इसका सीधा सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों पर भी पड़ता है, जिससे अमुक शिक्षकों के कक्षा–कक्ष वातवारण और अधिक प्रभावशाली हो सकेंगे जिसका सकारात्मक प्रभाव शिक्षकों के शिक्षण कार्य पर पड़ेगा है और अमुक शिक्षक की कक्षाओं के शैक्षिक परिणाम भी उच्च स्तर के हो सकेगें। फलतः उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों को सम्पूर्ण विद्यालय में सभी व्यक्तियों द्वारा अधिक पसन्द भी किया जाता है। परिणाम स्वरूप स्पष्ट होता है कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों को स्वयं की क्रियाओं की गुणवत्ता के कारण विद्यालय में उच्च स्थान व सम्मान प्राप्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बेस्ट, जॉन. डब्ल्यू. (1972). रिसर्च इन एजूकेशन, यू.एस. एस. प्रिंटस हॉल (इंक) ए. ग्लिवड क्पिस।

गुप्ता, रुचि. (2009). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षक प्रभावशीलता एवम् संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी॰ई॰आई॰, दयालबाग, आगरा।

मोहन्ती, जगन्नाथ. (2003). टीचर एजूकेशन, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

नाइक, आर.एच. (2006). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षक प्रभावशीलता एवम् संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (शिक्षा), सन्दर्भित डी॰ई॰आई॰, दयालबाग, आगरा।

रॉय, वी.के. (2004). एजूकेशन टैक्नोलॉजी, ए.पी.डब्ल्यू. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।